माननीय राज्यपाल हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 4 सितम्बर, 2016 को भिवानी में स्वतंत्रता सेनानी सम्मान समारोह में दिया गया भाषण

भिवानी एवं महेन्द्रगढ़ के सांसद मान्यवर धर्मबीर सिंह जी, मेरे सचिव डा0 अमित कुमार अग्रवाल जी, महान स्वतंत्रता सेनानी पं0 नेकी राम शर्मा जी के परपौत्र श्री महेश शर्मा जी, श्री सुरेश शर्मा जी व श्री पराग शर्मा जी, चौ0 बंसीलाल विश्वविद्यालय के कुलपति श्री एस0 के0 गक्खड़ जी, जिला परिषद भिवानी के चेयरमैन श्री रमेश ओला जी, यहाँ के डिप्टी कमिश्नर श्री पंकज जी, अन्य सभी प्रशासनिक अधिकारीगण और इस अवसर पर उपस्थित सभी स्वतंत्रता सेनानीगण, जिनका मैने अभिनंदन किया है, और स्वतंत्रता सेनानियों के अन्य परिजन जो बहुत बड़ी संख्या में यहाँ पर उपस्थित हैं तथा इस प्रेरणादायी अवसर पर उपस्थित सभी भाइयो–बहनो व पत्रकार बंधुओ!

मैं याद कर रहा था कि क्या राज्यपाल के नाते मैं भिवानी में पिछली बार आया हूँ ? इससे पहले मैं भिवानी शहर में तो नहीं आया लेकिन भिवानी एयर स्ट्रीप पर जरूर आया था, किसी दूसरे कार्यØम में जाने के लिए। आज भी मैं देर से भिवानी में आया लेकिन एक ऐसे कार्यØम में आया हूँ, जिस कार्यØम में हम अपने स्वतंत्रता सेनानियों को याद कर रहे हैं। स्वतंत्रता सेनानियों के सम्मान की बात जब हम अपने मन में लाते हैं तो हम सबका माथा स्वाभिमान से एवं गर्व से ऊँचा हो जाता है। यह एक ऐसा पुनीत एवं प्रेरणादायी कार्यØम है जब हम इस अवसर पर इस पंचायत भवन में स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान ही नहीं कर रहे, उनकी कुर्बानियों को भी याद कर रहे हैं।

देश को स्वतंत्र हुए 69 वर्ष पूरे हुए और 70वीं वर्षगाँठ अभी हमने 15 अगस्त को मनाई है। जब 70वीं वर्षगाँठ हम 15 अगस्त को मना रहे थे तो अपने देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने लाल किले की प्राचीर से भाषण करते समय स्वतंत्रता सेनानियों को याद किया और उन्होंने कहा कि हमारी आजादी की नींव में सबसे बड़ा योगदान हमारे स्वतंत्रता सेनानियों का है, जिन्होंने कितनी कुर्बानियाँ दी हैं। कितने लोगों ने कुर्बानियां दीं, कितने नाम लिए जाएं। सब नाम भी नहीं लिए जा सकते।

इसलिए केन्द्र की सरकार ने कहा कि हम सब देशवासियों को स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग को, कुर्बानी को याद करना चाहिए और स्थान–स्थान पर जाकर उनका सम्मान करना चाहिए। उसी कड़ी में मैने सोचा कि भिवानी में जब जा रहे हैं तो भिवानी भी स्वतंत्रता सेनानियों की ऋणी है। हमे यहाँ पर पं0 नेकी राम शर्मा की स्मृति में कार्यØम करना चाहिए। उस कार्यØम के अंदर, हरियाणा के विभिन्न स्थानों पर जितने स्वतंत्रता सेनानी हैं उन सबको बुलाकर उनका सम्मान करना चाहिए। हम आज वह सम्मान कर रहे हैं।

जब हम किसी स्थान पर जन्म लेते हैं तो स्थान ऐसे होते हैं जिनके कारण हम जाने जाते हैं। कहा जाता है ये व्यक्ति वहाँ के हैं। लेकिन कुछ महानुभाव, कुछ महापुरूष ऐसे होते हैं कि अगर वे किसी स्थान पर जन्म लें तो वह स्थान उनके नाम से जाना जाता है। जैसे पं0 नेकी राम शर्मा का जब हम स्मरण करते हैं तो उनके नाम के साथ ही भिवानी का स्मरण हो जाता है। उनका जन्म भिवानी जिले के एक गाँव में हुआ था, वह केलंगा नाम का गाँव है जो अभी यहाँ के डी0 सी0 बता रहे थे। वे 1910 में भिवानी में आ गए। 1912 में उन्होंने अपना मकान बनवाया और 1956 तक जब तक वे जिन्दा रहे उसी मकान के अंदर रहे।

उनके बारे में महेश जी ने बहुत कुछ बताया है। वे देश की स्वतंत्रता के लिए ही नहीं लड़े थे बल्कि जितनी कुरीतियाँ थीं, जितनी समाज के अंदर ऐसी चीजें व्याप्त थीं जिनके कारण समाज का पतन हो रहा था उन सबके खिलाफ उन्होंने संघर्ष किया। पं0 नेकी राम शर्मा ने लोकमान्य तिलक को हिन्दी पढ़ाई। सिर्फ हिन्दी ही नहीं पढ़ाई, लोकमान्य तिलक के चरणों में बैठकर उन्होंने यह संकल्प लिया कि जब तक मैं अपने देश को स्वतंत्र नहीं करा लेता तब तक चैन से नहीं बैठूंगा। पूरा समय, पूरा जीवन उन्होंने देश की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए लगा दिया। अभी जैसा महेश शर्मा जी बता रहे थे, उन्होंने अपने जीवन काल के 39 वर्ष, 39 वर्ष बहुत होते हैं, इस तरह पूरा जीवन ही उन्होंने देश के लिए समर्पित कर दिया। भिवानी के निवासी बहुत धन्य हैं कि पं0 नेकी राम शर्मा भिवानी में रहते थे।

जब 1947 में देश स्वतंत्र हो गया तो राष्ट्रपति महोदय ने, जो देश के प्रथम नागरिक होते हैं, देश के गणमान्य व्यक्तियों में से वे सर्वोच्च माने जाते हैं, सर्वोच्च पद पर होते हैं, उन्होंने पं0 नेकी राम शर्मा जी को निवेदन किया कि आपको हम ऊँचे से ऊँचा पद दे सकते हैं, बताइए आपको क्या चाहिए ? इतना सम्मान देश के राष्ट्रपति ने उनको दिया। पंजाब की सरकार ने उनको उस समय 200 रूपये पेंशन देने की बात की। लेकिन हमारा माथा तब गर्व से ऊँचा उठ जाता है, जब हम यह

सुनते हैं कि पं0 नेकी राम शर्मा ने दोंनो ही बातें refuse कर दीं। मना कर दिया कि मुझे ऊँचा पद नहीं चाहिए। मुझे 200 रूपये पेंशन नहीं चाहिए। क्योंकि मैने जो कुछ कुर्बानी दी थी वह कुर्बानी कुछ प्राप्त करने के लिए नहीं दी थी। वह माँ की सेवा थी और माँ की सेवा के बदले में कुछ माँगा नहीं जाता, कुछ लिया नहीं जाता। यह कितनी महान बात है। इतना सब कुछ मिलने की बात हुई परंतु वह भी उन्होंने स्वीकार नहीं किया। ऐसे थे पं0 नेकी राम शर्मा। ऐसे ही कितने स्वतंत्रता सेनानियों के नाम गिनाएं।

हरियाणा का जब हम विचार करेंगे तो हरियाणा तो स्वतंत्रता संग्राम के लिए पूरे देश में अग्रणी है। स्वतंत्रता सेनानियों का पहला प्रयास कहां से शुरू होता है ? यह 1857 से शुरू होता है जो प्रथम स्वतंत्रता का संग्राम कहलाता है। 1857 की जो पहली लड़ाई हमारे देश में हुई थी स्वातंत्रय वीर सावरकर ने उसे स्वतंत्रता का पहला संग्राम कहा। अंग्रेज तो उसको गदर कहते थे। वे कहते थे कि यह गदर है, जो सत्ता के खिलाफ लड़ी जा रही है। लेकिन स्वातंत्रय वीर सावरकर ने 1857 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए जो प्रयास शुरू हुआ, उसको प्रथम स्वतंत्रता का संग्राम कहा। उस प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी हरियाणा में फूटी थी। वह अम्बाला की छावनी में फूटी थी 8 मई 1857 को। उस दिन को हमें याद करना चाहिए जब अम्बाला की छावनी से प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी निकली।

स्वतंत्रता सेनानियों से पूरा का पूरा हरियाणा भरा हुआ है। यहाँ तक कि सुभाष चन्द्र बोस, जिसका अभी हमारे स्वतंत्रता सेनानी नारा लगा रहे थे, स्वतंत्रता के लिए जिस आजाद हिन्द फौज की रचना सुभाष चन्द्र बोस ने की थी, उस आजाद हिन्द फौज में सिर्फ हरियाणा क्षेत्र से 1715 जवान थे जो देश की स्वतंत्रता के लिए लड़े। किस–किस को याद करें ? राजगुरू, सुखदेव, भगत सिंह, चन्द्र शेखर आजाद, सुभाष चन्द्र बोस कितने स्वतंत्रता सेनानी हैं ? हम सबको उन्हें नहीं भूलना चाहिए।

अंत में मैं एक ही बात कहूँगा कि पं0 नेकी राम शर्मा का जब भिवानी के अंदर अभिवादन हुआ, देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद जब उनका स्वागत किया गया तो उन्होंने जो शब्द कहे थे, वे ही कहूंगा। उन्होंने कहा कि मैने अपने जीवन की जिन्दा रहते अन्तिम इच्छा पूरी कर ली है। मेरे जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा यही थी कि देश स्वतंत्र होना चाहिए। उनका देहांत तो 1956 में हुआ और जब 1947 में देश स्वतंत्र हुआ और उनका अभिनंदन किया गया तो कहते हैं कि हमारी स्वतंत्रता कब पूरी होगी? देश स्वतंत्र हो गया, देश की गद्दी पर अपने लोग बैठ गए, लेकिन यह स्वतंत्रता पूरी नहीं है, यह स्वतंत्रता पूरी तब होगी जब हमारे देश के

अंदर प्रत्येक देशवासी को, प्रत्येक परिवार के अंदर वह सब कुछ प्राप्त हो जाएगा जो जीवन जीने के लिए आवश्यक है। सुख से जीवन जीने के लिए, पूरे स्वाभिमान से जीवन जीने के लिए जिसकी आवश्यकता है वह प्रत्येक परिवार को जब तक नहीं मिलेगा तब तक हमारी यह स्वतंत्रता हम पूरी नहीं मानेंगे। यह उनकी इच्छा थी। इस इच्छा को पूरा करने के लिए हम सबको आगे आना चाहिए। सरकार का भी संकल्प यही है। हम स्वतंत्रता का सही सपना जो देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने देश को स्वतंत्र कराने के लिए संजोया था वह सपना पूरा करने के लिए हम भरसक प्रयास करेंगे।

इसलिए आज इस अवसर पर देश के प्रधानमंत्री भी चाहते हैं, पं0 नेकी राम शर्मा जिनको हम याद कर रहे हैं, उनकी भी अन्तिम इच्छा थी कि प्रत्येक घर में सुख, शान्ति और समृद्धि और घर–परिवार में सुखी जीवन बिताने के लिए जो आवश्यकता होती है वह हमें प्राप्त होनी चाहिए। वह सब हमें प्राप्त हो इसी कामना के साथ पं0 नेकी राम शर्मा व अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के चरणों में मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आप सबको धन्यवाद देता हूँ। यह कार्यØम यहाँ पर जिला सैनिक बोर्ड़ ने किया है मैं उसका भी धन्यवाद करता हूँ और जिला सैनिक बोर्ड़ को अपने कोष से 2 लाख रूपये अनुदान देने की घोषणा करता हूँ।

धन्यवाद!